इसने मेघ को ही दूत बनाकर अपनी प्रियतमा के पास भेजने की ठान ली। परन्तु यह कामना अद्भुत थी। यह कोई [illegible] इन मेघों की कुटजपुष्पों से पूजा की तथा मेघ के कुल एवं उसके कौशल भूमि भूरि प्रशंसा करता हुआ अपनी प्रियतमा के पास संदेश कहने को तत्पर हुआ।

परन्तु महाकवि कालिदास के लिए मेघ से संदेश भिजवाना इतना आसान नहीं था। इसे अच्छी तरह मालूम था की लोकों में इसकी कपटी आलोचना होगी। या तो यक्ष पागल समझा जाएगा या फिर कवि को। महाकवि इस स्थिति मानते हुए अपना दोष निवारण करते हैं।

धूम्रज्योति सलिलमरुतां सन्निपात मेघः
सन्देशार्थाः कृपट्करणौ प्रीतिकी प्राणमीया।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गृह्यकान्तं ययाचे,
कामार्ता हि प्रकृति कृपणा चेतना चेतनेषु॥

Sanskrit (Honours)
B.A. (1st part)

डॉ० विजयमल बैठा
एसोसिएट प्रोफेसर
आर.सी.एल. कॉलेज, मंझौल,
बेगूसराय

मेघदूतम् (पूर्वमेघ)

जैसा कि मेघदूत की विदुषता होता है कि यक्ष अपनी प्रेयसी से बहुत प्रेम करता था। विरह विधुर यक्ष स्मृति का हार पिरोने लगा। इसी क्रम में सभी ऋतुओं ने क्रमशः अपना समय व्यतित कर लिया। पत्पश्चात् वर्षा ऋतु का आगमन हुआ। आषाढ़ मास में प्रथम दिन को रामगिरि श्रृंग को जाकर मेघवाड़ आकर आश्लिष्ट होने लगे। महाकवि ने इस परिचरना की तुलना बहुत ही प्राकृतिक एवं मनोरंजक रूप से हाथियों की परस्पर क्रीड़ा के रूप में भी है। महाकवि यहाँ अतीव मनोवैज्ञानिक रूप से मानव मन की व्याख्या करते हैं तथा वर्षा ऋतु बड़े बड़े प्रेमियों के लिए उत्तम माना जाता है इसका भी वर्णन करते हैं—

मेघालोके भवति सुखिनो व्यत्यया वृत्तिचेतः।
कण्ठाश्लेष प्रणयिनी जने किं पुनर्दूरवर्त्यः॥

अर्थात् मेघ को देखकर तो खुशी व्यक्ति भी अपना सुध-बुध खो बैठते हैं तथा उनसे मिलन की आकांक्षा होने लगती है, फिर जो व्यक्ति एक दूसरे से दूर हो उनका तो कहना ही क्या—

अतएव वह वियोगी यक्ष व्याकुल हो उठा। इसके मन की अपनी प्रियतमा के लिए तरह भी भाव नाव उठी लगी। परन्तु उनके भाव मनुष्यों को न तो कोई वहाँ सुनने वाला था। और न समझने वाला था। इसका अनुभव हम यक्ष निकालने के उद्यत हुआ।